

भाग-4

(‘तेज मेमोरी’ के कुछ अन्य सहायक तथ्य)

आपका "तेज मेमोरी" भाग-4 में स्वागत है

एक अच्छे विद्यार्थी के लिए अति आवश्यक है कि

उसे पढ़ना आता हो ;

उसे समझना आता हो ;

उसे याद करना आता हो ; तथा

उसे याद रखना (दुहराना) आता हो।

इस भाग - 4 में पढ़ना, समझना तथा दुहराने को विस्तार से बतलाया गया है।

41 पढ़ाई कैसे करें ?

आपको लग रहा होगा कि पढ़ना आता है तभी तो आप इस 'पढ़ाई कैसे करें ?' को पढ़ पा रहे हैं। आपका सोचना एकदम सही है। यहां हम पढ़ाई के कुछ वैज्ञानिक पहलुओं पर विचार करेंगे जिसके चलते भी हमारी मेमोरी थोड़ी कमजोर होती है।

तेजी से पढ़ने के क्या फायदे हैं ?

तेजी से पढ़ने के निम्नलिखित फायदे हैं :-

- 1) इससे समय की बचत होती है।
- 2) इससे अधिक पढ़ाई की जा सकती है।
- 3) इससे आपकी एकाग्रता बढ़ती है।
- 4) इससे मेमोरी तेज होती है।
- 5) इससे समझना आसान हो जाता है।

धीमी गति का पाठक एक मिनट में 100 से 200 शब्द पढ़ सकता है। सामान्य गति का पाठक एक मिनट में 200 से 300 शब्द पढ़ सकता है। परंतु तेज गति का पाठक एक मिनट में 600 या उससे भी अधिक शब्द आसानी से पढ़ एवं समझ सकता है।

तेजी से पढ़ना, समझना तथा याद रखना उसी प्रकार है जैसे तेजी से गाड़ी चलाना। जिसने गाड़ी 120 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलायी है, उसके लिए 80 किमी प्रति घंटे की चाल काफी आसान मालूम होगी।

तेजी से कैसे पढ़ें ?

तेजी से पढ़ने के लिए आप निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें :-

(1) **बिना बोले पढ़ना** : पढ़ाई की सबसे बड़ी समस्या है मन में बोल-बोलकर पढ़ना। इससे हमारी रफ्तार धीमी हो जाती है। यदि बिना बोले पढ़ते हैं तब भी हमारे मन में जो पढ़ रहे होते हैं, उसकी हल्की-हल्की ध्वनि उत्पन्न होती रहती है। यह आदत हमें बचपन में अक्षरों के ज्ञान प्राप्त करने तथा गिनती को याद करने के कारण प्राप्त हुआ है। अतः आप बिना बोले पढ़ने का अभ्यास करें।

(2) **आगे बढ़ते रहना** : सामान्यतः हमारी आदत होती है कि आगे पढ़ने के साथ-साथ बीच में रुककर पीछे पढ़े गये शब्दों को भी देख लेते हैं। ऐसा हमारे अंदर आत्मविश्वास में कमी के कारण होता है। आज से आपको कोशिश यही करना है कि आप अपने ऊपर पूरा विश्वास रखेंगे कि आपने जो भी पढ़ा है वह सही है और आगे बढ़ते रहेंगे। बाद में जब आप पढ़े गये पाठ को दुहरायेंगे तो आपको स्वयं ज्ञात हो जायेगा कि आपने पढ़ने में गलती कहां की थी।

(3) **ज्यादा से ज्यादा शब्द पढ़ना** : हमारी आदत प्रत्येक शब्द को पढ़ने की होती है। यह आदत भी बचपन से ही बनी है। बचपन में हम मात्र अक्षरों को पहचानते थे। अतः उन अक्षरों को जोड़-जोड़ कर शब्द बनाते थे। किन्तु अब हम एक बार में एक शब्द को पढ़ते हैं और बिना समय खर्च किये उनको समझ भी लेते हैं। इसी प्रकार **यदि हम एक से ज्यादा शब्दों को एक बार में पढ़ने की आदत डालेंगे** (जो बिना बोले पढ़ने से ही हो सकता है) तो हम अनेकों शब्दों को एक बार में पढ़ सकते हैं तथा उनका अर्थ भी बिना समय गवाएं समझ सकते हैं।

(4) **खूब पढ़ना** : हमारे दिमाग में शब्दों का संग्रह दो प्रकार से होता है। कुछ शब्द सक्रिय होते हैं तथा कुछ निष्क्रिय। सक्रिय शब्दों को हम समझने के साथ-साथ उपयोग भी करते हैं, परंतु निष्क्रिय शब्दों का उपयोग केवल समझने के लिए होता है।

जब हम खूब पढ़ते हैं तो अनजाने शब्द पहले निष्क्रिय शब्द बनते हैं जो समझने में मदद करते हैं तथा बाद में वे सक्रिय शब्द हो जाते हैं, जिनका उपयोग हम बोलने तथा लिखने में भी करने लगते हैं।

(5) **तेजी से पढ़ने की कोशिश करना** : आप इसके अभ्यास के लिए सबसे पहले बच्चों की कहानियां (आसान) तथा अखबार (अनावश्यक) विषय का चुनाव कर सकते हैं। जितना आप तेजी से पढ़ सकते हैं उतनी तेजी से पढ़ें। रोज अपनी गति को बढ़ाते जाएं। कहानियां तो आसान होती हैं, अतः आप कुछ भाग बिना अच्छे से समझे भी आगे बढ़ सकते हैं एवं अखबार में 90 प्रतिशत बातें तो अनावश्यक ही होती हैं। यही कारण है कि हमें पुराने अखबारों की बहुत कम आवश्यकता होती है। अतः अखबार को भी आप बहुत तेजी से पढ़ सकते हैं।

पढ़ने की गति की जांच कैसे करें ?

यह काफी आसान है तथा सामान्य गणित के सूत्रों पर आधारित है। सबसे पहले जो पाठ आप पढ़ने जा रहे हैं उसके शब्दों की संख्या की गणना कर लें। उसके बाद पढ़ने के शुरु के समय का तथा पढ़ाई के बाद के समय को लिख लें। इसके बाद आप आसानी से अपनी गति की जांच कर सकते हैं। सबसे आसान है कि आप नीचे लिखे गये शीर्षक "**बुद्धि का विकास**" को पढ़ें तथा अपनी गति की जांच करें।

शुरु का समय -----

बुद्धि का विकास

बुद्धि सच्चाई देखने की क्षमता का नाम है जो जितनी गहरी सच्चाई देख सकता है वह उतना ही ज्यादा बुद्धिमान है। अतः व्यक्ति का बुद्धि से जुड़ाव हो, इसके लिए आवश्यक है कि व्यक्ति सच्चाई देखने की आदत डाले। सच्चाई देखने का अर्थ है किसी भी चीज को बिना पक्षपात के उसकी सच्चाई जैसी भी हो, वैसी देखना। इसके लिए हमें पहले देखने की आदत डालनी होगी। यहां देखने का अर्थ आंतरिक आंख से देखने से है। इसे मन की आंखें कहते हैं। यह वह आंख है जिसका संबंध यदि बाहरी आंख से हो तो व्यक्ति ध्यान से देखता है। कान से हो तो व्यक्ति ध्यान से सुनता है, जीभ से हो तो व्यक्ति ध्यान से स्वाद लेता है, त्वचा से हो तो व्यक्ति अच्छे से अनुभव करता है तथा नाक से हो तो व्यक्ति ध्यान से सूंघता है। इस आंतरिक आंख का जितना उपयोग व्यक्ति करता है, उतना ही उसका सामना सच्चाई से होता है। अतः हमारे लिए यह अति आवश्यक है कि हम इस आंतरिक आंख का उपयोग करें।

अंत का समय-----

तेज मेमोरी

आपके द्वारा लिया गया समय = अंत का समय (-) शुरु का समय
= ----- (-) ----- =----- सेकेण्ड

<u>समय (सेकेण्ड में)</u>	<u>आपकी पढ़ने की गति (एक मिनट में)</u>
70	150
65	160
60	174
55	190
50	209
45	232
40	261
35	298
30	348
25	418
20	522
15	696
10	1044
5	2088

42

‘लेमैन थ्योरी’ से कैसे आसानी से समझें ?

‘लेमैन थ्योरी’ क्या है ?

LONGMAN Dictionary of Contemporary English के अनुसार "**Layman = someone who is untrained in a particular subject or type of work, especially when they are being compared with someone who is.**"

(पृष्ठ संख्या 798).

अर्थात् ले-मैन वह व्यक्ति है जो किसी विशेष क्षेत्र के लिए नया है तथा उसको उस नये विषय के बारे में जानकारी कम है। ‘लेमैन थ्योरी’ किसी भी विषय को उस विषय के प्रतिपादक (जन्मदाता जिसके लिए भी वह विषय एक समय में नयी रही है) के समझने का सिद्धांत है। ‘लेमैन थ्योरी’ के पूर्ण प्रशिक्षण के बाद आपके लिए प्रत्येक नया विषय आसान हो जायेगा तथा आपके लिए सोचना एवं समझना आसान हो जायेगा। हमारा दिमाग (विशेषकर काल्पनिक भाग या दायां भाग) अनंत संभावनाओं को जन्म दे सकता है। यदि हम किसी भी विषय पर अपना ध्यान ले जाते हैं तो धीरे-धीरे हमारा दिमाग काम करना शुरु करता है तथा सही संभावनाओं का पता लगाकर सही निर्णय पर पहुंचाता है। हम दिमाग के इस गुण का उपयोग अपने आपको किसी विषय के प्रतिपादक के रूप में सोचने के लिए करते हैं और धीरे-धीरे पाते हैं कि हम भी उस विषय पर उसके प्रतिपादक के रूप में सोच पा रहे हैं। इस प्रकार हम भी उस विषय के प्रतिपादक हो जाते हैं और वह विषय हमारे लिए पुरानी एवं जानी पहचानी हो जाती है।

‘लेमैन थ्योरी’ का इतिहास क्या है ?

बचपन से मैं किसी भी विषय को ऐसे समझता था जैसे उसका जनक (प्रतिपादक) मैं ही हूं। इस तरीके का उपयोग मैं लोगों को किसी भी विषय को समझाने के लिए करता था। बचपन से मेरा लगाव किसी भी विषय में हो जाता था। जहां भी समझना हो वहां मैं हमेशा तैयार हो जाता था। मेरे लिए मुश्किल था तो किसी भी बात को मानना।

यही मेरी समस्या भी थी। कहीं कोई विचार हो रहा हो वहां मैं बैठ जाता था और विचार करने में शामिल हो जाता। मेरे बचपन का अंत होने लगा तथा धीरे-धीरे कम उम्र में ही मैं बूढ़ा बनता चला गया। जैसे-जैसे अनुभव होता गया, जीवन की सच्चाई दिखती गयी और समाज तथा उसकी परंपराएं पीछे छूटती चली गयी। अब मेरे जीवन में महत्व रहा तो मात्र व्यक्ति का। मेरे लिए व्यक्ति सब कुछ होने लगा तथा समाज छोटा होता चला गया। मुझे आश्चर्य लगने लगा यह देखकर कि समाज व्यक्तियों को एक व्यवस्था देने के लिए बना है परंतु व्यक्तियों की बली समाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए होती रहती है। हम इतने पागल हो गये हैं कि बिना व्यक्ति के भी समाज बनाने के लिए तैयार हैं।

आज से 10 वर्ष (1995 ई.) पहले मैंने निर्णय लिया कि मुझे अपना जीवन व्यक्तियों के विकास के लिए लगाना है। मुझे इस बात का ज्ञान था कि व्यक्ति तो विकास करना चाहते हैं परंतु समाज के लिए विकसित होना एक कठिनाई है। इसका मुख्य कारण यह है कि समाज में अनेकों व्यक्ति होते हैं तथा सभी का एक साथ तथा एक ही गति से विकसित होना असंभव है। अतः व्यक्ति के विकास होने से समाज में एक प्रकार का टकराव शुरू हो जाता है। इस प्रकार यदि हम व्यक्ति का विकास करेंगे तो प्रत्येक जगह एक नये प्रकार का समाज का जन्म होगा तथा पुराना समाज समाप्त होता चला जायेगा।

आज से 5 वर्ष पहले (2001 ई.) मैं ध्यान में बैठा था उसी समय मेरे दिमाग में लेमैन (layman) शब्द आया तथा मेरी आंखें खुल गयीं। मैंने तुरत इस शब्द का अर्थ Longman Dictionary of Contemporary English में देखा तो पाया कि इसका अर्थ वही है जिसके आधार पर लोगों को मैं समझाता हूं। फिर मुझे याद आया कि मेरे दोस्त मुझे कभी-कभी लेमैन (मूर्ख) क्यों कहते थे? उनके कहने का तात्पर्य मात्र इतना था कि मैंने समाज को छोड़ दिया है तथा मुझे सामाजिक प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए। मेरी मां भी यही कहती थीं-"यदि तुम बात मान लोगे तो बड़े आदमी हो जाओगे", परंतु मेरे पास इतिहास का अनुभव प्राप्त हो रहा था तथा 50 वर्ष दूर तक दृष्टि जा रही थी तो मैं मां की बातें कैसे मानता? इस प्रकार मैंने अपने सिद्धांत का नाम 'लेमैन थ्योरी' दिया।

'लेमैन थ्योरी' का उपयोग पढ़ाई में कैसे करें ?

'लेमैन थ्योरी' का उपयोग आप किसी भी क्षेत्र में अपने समझ का उपयोग कर के बहुत अच्छे प्रदर्शन करने के लिए कर सकते हैं। आप इस थ्योरी से किसी भी व्यक्ति का मुख्य

बिन्दु समझ सकते हैं एवं अपने जीवन में उनका उपयोग कर सफलता प्राप्त कर सकते हैं। पढ़ाई में 'लेमैन थ्योरी' का उपयोग करने के लिए निम्नलिखित तीन कदम उठाने पड़ते हैं :-

(क) **शीर्षक** : किसी भी विषय के शीर्षक का सबसे पहले अर्थ का ज्ञान प्राप्त करते हैं। उस अर्थ के आधार पर अपने अनुभव का उपयोग कर दिमाग में एक धुंधला सा तस्वीर बनाते हैं कि इस शीर्षक के अंदर क्या हो सकता है। यहां हम संबंधित विषय का भी ध्यान रखते हैं, जैसे भौतिकी विषय है तो उसके शीर्षक की व्याख्या भौतिक विज्ञान के अनुभव के आधार पर करते हैं।

(ख) **व्याख्या** : एक बार आपके मन में उस शीर्षक की संभावित व्याख्या हो गयी तो उसके बाद आप उस शीर्षक के नीचे लिखे गये व्याख्या को देखें। आपका दिमाग पूरी तरह खुल चुका है तथा आप नयी व्याख्या को आपकी अपनी व्याख्या से तुलना करके उसका अर्थ आसानी से समझ सकता है।

(ग) **जांच** : अब यदि आवश्यक हो तो दोनों व्याख्याओं की जांच करें। आपको काफी समानता मिलेगी। अगर अंतर होगा तो केवल शब्दों के हेर-फेर का।

43

दुहराने का तरीका

एक पहेली है जिसका उत्तर एक ही है। "घोड़ा अड़ा क्यों ? पान सड़ा क्यों ? रोटी जली क्यों? पढ़ाई भुली क्यों ?" इनका उत्तर है - 'पलटा न था' ।

इसी प्रकार हम कितनी भी अच्छी तरह पढ़ाई कर रहे हों, हमें लगातार एक व्यवस्थित तरीके से दुहराना ही पड़ता है। परंतु अधिकांश लोगों की एक किसान जैसी होती है जो पूरे वर्ष मेहनत करता है परंतु फसल काटते वक्त उसे नींद आ जाती है और उसका फसल बरबाद हो जाता है। बाद में किसान रोता है तथा अपने भाग्य को कोसता रहता है।

दुहराने के लिए नोट्स कैसे बनाएं ?

दुहराने में हम कम से कम समय देना चाहते हैं। दुहराना हमें समय की बर्बादी जैसा लगता है। एक तरह से यह सही भी है। यदि हम अपना समय केवल दुहराने में ही लगाते रहेंगे तो आगे की पढ़ाई कैसे करेंगे ? यहां आपके लिए एक व्यवस्थित उपाय को दे रहे हैं। इसका उपयोग आप किसी भी परीक्षा की तैयारी के लिए कर सकते हैं। इसके निम्नलिखित कदम हैं:-

पहला कदम - मूल नोट्स (Base Notes) :

आपका किसी भी परीक्षा की तैयारी के लिए आवश्यक है कि आप एक मूल नोट्स बनाएं। यह कुछ भी हो सकता है,

- जैसे - किसी कोचिंग का नोट्स
- आपका नोट्स
- कोई अच्छी किताब, या
- किसी मित्र का नोट्स

आप इस मूल नोट्स में वो सारी चीजें जोड़ते चले जाएं जो आपको आगे किसी और साधन से मिलती हैं। उदाहरण के लिए, यदि आपको कोई पढ़ाई या याददाश्त से संबंधित कोई बात मिलती है तो उसे भी आप इस 'तेज मेमोरी' पुस्तक में जोड़ सकते हैं जो आगे आपके काम आ जायेगी।

दूसरा कदम - मुख्य शब्दों का संग्रह :

आप अपने मूल नोट्स के शुरु में कुछ पेज खाली रखें और उसके सभी मुख्य शब्दों को संग्रह कर लें। वहीं से आपको यह ज्ञात हो जायेगा कि किस भाग पर आपको ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है।

तीसरा कदम - विस्तार से दुहराना :

पहले आपको उन चीजों को भी विस्तार से दुहराना चाहिए जिनको आप जानते हैं। इससे आपकी भाषा भी अच्छी हो जायेगी एवं आप आत्मविश्वास से किसी भी भाग को परीक्षा में लिख सकते हैं।

चौथा कदम - केवल मुख्य शब्दों को दुहराना :

एक बार आप आश्चर्य हो गये कि आगे दुहराए बिना भी आप विस्तार से वर्णन कर सकते हैं तो आप केवल मुख्य शब्दों को दुहराएं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपका कौन सा भाग अच्छा है और किस भाग पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है।

पांचवां कदम - नोट्स बनाने में 'तेज मेमोरी' के सूत्रों का उपयोग :

'तेज मेमोरी' के सूत्रों को संबंधित जगह पर कोष्ठ '()' में लिख दिया करें तथा दुहराते समय इनका भी उपयोग करें। इससे आपको परीक्षा में काफी मदद मिलेगी।

छठा कदम - विशेष चिन्हों तथा रंगों का उपयोग :

आप नोट्स बनाने के लिए संबंधित जगहों पर विशेष चिन्हों का भी उपयोग कर सकते हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण होता है वृत्त '0' क्योंकि यह हमारे दिमाग को काफी आकर्षित करता है। चिन्हों के अलावा आप अपने पसंद के रंगों का भी उपयोग कर सकते हैं। इससे भी आपको काफी मदद मिलती है।

तेज मेमोरी

हम भी पढ़ाई तो दिल लगाकर करते हैं परंतु दुहराना तथा याद करना हमारे लिए एक समस्या लगती है। जिसको हल करना समय की बरबादी जान पड़ती है। आपको आज से एक नई आदत डालनी है। 'तेज मेमोरी' पुस्तक का उपयोग करना है तथा दुहराना है। इससे आप रोज अच्छे होते चले जायेंगे तथा आत्मविश्वास से पूर्ण होते चले जायेंगे। नीचे दुहराने की सारणी दी गयी है। इसका उपयोग आप आज से ही शुरू कर दें।

दुहराने की सारणी (विशेषकर स्कूल के विद्यार्थियों के लिए)

दुहराने का क्रम	दुहराने का वक्त	दुहराने में लगा समय (अधिकतम)	विषय
1	कक्षा में पढ़ाई के बाद	30 से 45 सेकेण्ड	तुरंत पढ़े गये विषय को
2	रात में सोने से पहले	10 मिनट	पूरे दिन की पढ़ाई को
3	सुबह उठने के बाद	10 मिनट	कल की पढ़ाई को
4	कक्षा में पढ़ाई शुरू करने से पहले	30 से 45 सेकेण्ड	कल के विषय को
5	सप्ताह में एक दिन	2 घंटे	पूरे सप्ताह की पढ़ाई को
6	माह में एक दिन	6 घंटे	पूरे माह की पढ़ाई को

यदि आप किसी परीक्षा की तैयारी घर बैठे कर रहे हैं तो आपको अपने समय को एक-एक घंटे में ऐसे बांटना चाहिए, जैसे आप स्कूल में पढ़ रहे हों। उसे बाद आप भी ऊपर दिये गये 'दुहराने की सारणी' का उपयोग कर सकते हैं।

44

अंग्रेजी के स्पेलिंग (spelling) को ठीक से याद रखना

अधिकतर लोग ऐसे होते हैं जिनको किसी भी अंग्रेजी शब्द के स्पेलिंग को बोलने से पहले उसको लिखना पड़ता है। इसका अर्थ हुआ कि हमारे दिमाग को अंग्रेजी के स्पेलिंग का ज्ञान कम होता है और हमारे हाथ को इसका ज्ञान ज्यादा होता है।

यही हमारी परेशानी है कि ऐसा क्या करें जिससे जो ज्ञान हमारे हाथ के पास है वो हमारे दिमाग के पास भी हो जाए। नीचे इसका उपाय लिखा जा रहा है उसकी मदद से आप अपनी अंग्रेजी के स्पेलिंग की गलती में सुधार कर सकते हैं।

1) **एक अक्षर की गलती** : इसमें आप पांच बार गलत स्पेलिंग को लिखें तथा उसके गलती के ऊपर 'X' का चिन्ह लगा दें तथा उसके बाद पांच बार बड़े अक्षर में सही अक्षर को लिखें।

जैसे - separate के जगह seperate लिखना

separate, separate, separate, separate, separate
separate, separate, separate, separate, separate.

2) **अंत में एक ज्यादा अक्षर को जोड़ना** : बहुत बार ऐसा होता है कि हम अंत में एक ज्यादा अक्षर को लिख देते हैं। इसको ठीक करने के लिए पहले गलत स्पेलिंग को लिखते हैं। उसके बाद अंतिम अक्षर के ऊपर 'X' चिन्ह लगाते हैं। उसके बाद एक वृत्त 'O' में बंद कर → का चिन्ह लगा देते हैं। ऐसा पांच बार करते हैं।

जैसे - develop की जगह पर develope लिखना

develop⊗→develop⊗→develop⊗→develop⊗→develop⊗

3) दो अक्षर के जगह पर एक अक्षर का उपयोग करना : इस स्थिति में हम सही अक्षरों को बड़े अक्षरों में लिखते हैं तथा उनके ऊपर एक बार घेरा बना देते हैं। ऐसा हम पांच बार लिखकर करते हैं। इसके साथ उनसे एक शब्द बनाकर सोचते हैं तथा एक तस्वीर भी देखते हैं।

जैसे - accommodate को acomodate की तरह लिखना

a(oo)(mm)odate, a(oo)(mm)odate, a(oo)(mm)odate,
a(oo)(mm)odate, a(oo)(mm)odate,

कल्पना करें, आप accommodate करने के लिए किसी को CoMe-CoMe कह कर बुला रहे हैं।

4) किसी अक्षर को लिखना भूल जाना : इस स्थिति में हम उस अक्षर को उससे संबंधित अक्षर से जोड़कर लिखते हैं तथा उसके ऊपर एक वृत्त '0' बना देते हैं। ऐसा पांच बार करते हैं।

इसके साथ हम उस अक्षर को उसके संबंधित अक्षर के साथ मिलाकर कोई शब्द बनाते हैं तथा उसका एक तस्वीर देख लेते हैं।

जैसे - judgment को jugment लिखना

ju(dg)ment, ju(dg)ment, ju(dg)ment, ju(dg)ment, ju(dg)ment,

कल्पना करें, judgment में जब judge बोलते हैं तो उनका आवाज dog (कुत्ते) जैसी हो जाती है।

45

"तेज मेमोरी" टेस्ट - 12

नीचे आपको 100 शब्दों को क्रम से दिया जा रहा है। आपको इन्हें 'ध्वनि पद्धति' का उपयोग कर याद करना है। (अधिकतम समय 15 मिनट)

शुरु का समय : -----

- | | | | |
|------------------|--------------|---------------|------------|
| 1. घड़ी | 2. रेलगाड़ी | 3. रेडियो | 4. पंखा |
| 5. ईंट | 6. जूता | 7. रसोई घर | 8. तकिया |
| 9. बैग | 10. आइना | 11. झाड़ू | 12. दरवाजा |
| 13. कबूतर | 14. दिवार | 15. मोबाइल | 16. फाइल |
| 17. चटाई | 18. खर | 19. खिड़की | 20. कलम |
| 21. दवाई | 22. कागज | 23. मोजा | 24. बोतल |
| 25. गैस | 26. चादर | 27. बर्फ | 28. कार |
| 29. कब्र | 30. मकान | 31. पानी | 32. लकड़ी |
| 33. चश्मा | 34. पेड़ | 35. टोपी | 36. पर्दा |
| 37. कमीज | 38. सूई | 39. तौलिया | 40. चौराहा |
| 41. चप्पल | 42. बल्ब | 43. नदी | 44. टेप |
| 45. ट्रक | 46. ट्रैक्टर | 47. पत्थर | 48. कुर्सी |
| 49. कम्प्यूटर | 50. पेप्सी | 51. डब्बा | 52. आटा |
| 53. पुल | 54. पहाड़ | 55. सिनेमा | 56. चपरासी |
| 57. प्रधानमंत्री | 58. चबूतरा | 59. तलवार | 60. फिटकरी |
| 61. गाय | 62. बरतन | 63. तीर | 64. सागर |
| 65. रोटी | 66. अमेरिका | 67. रेगिस्तान | 68. भगवान |
| 69. अचार | 70. स्कूटर | 71. सिपाही | 72. सूर्य |
| 73. कृष्ण | 74. धागा | 75. रजाई | 76. बादाम |

दायां दिमाग

इसे रचनात्मक दिमाग भी कहते हैं। इसका मुख्य कार्य तस्वीरों का

तेज मेमोरी

- | | | | |
|-------------|------------|--------------|--------------|
| 77. पलंग | 78. सोडा | 79. बैलगाड़ी | 80. बादल |
| 81. लड़की | 82. मास्टर | 83. किताब | 84. हाथ |
| 85. ताजमहल | 86. मछली | 87. कंबल | 88. पोस्टर |
| 89. माचिस | 90. बैल | 91. कोयल | 92. टेलिविजन |
| 93. मिठाई | 94. जंगल | 95. तजबूज | 96. बाघ |
| 97. दादा जी | 98. जहाज | 99. कॉपी | 100. चाय |

अंत का समय : -----

आपके द्वारा लिया गया समय = अंत का समय (-) शुरु का समय =-----

अब आप इन शब्दों को किसी अलग पेज पर क्रमानुसार लिखें। उनमें से कितने सही हुए उनकी जांच करें।

आपने समय में शब्द सही तरह याद किया।